

कीड़े आपके कपड़े खा रहे हैं? यह दरअसल उनके भूखे छोटे लार्वा है



एक पुराना दुश्मन

ग्रीक और रोमन साहित्य में कपड़ों के पतंगों के शुरुआती संदर्भों से पता चलता है कि मनुष्य हजारों सालों से कपड़े के पतंगों से जूझ रहे हैं। कपड़े के पतंगे कीटों (टिनिडे) के एक प्राचीन वंश का हिस्सा हैं और इन्होंने इस तरह कुछ विचित्र व्यवहार और अनुकूलन को संरक्षित किया है जिसके कारण कुछ प्रजातियां कीट बन गई हैं। ऑस्ट्रेलिया में कपड़े के पतंगे की सबसे प्रसिद्ध प्रजातियाँ हैं वेबिंग कीट (टिनोला बिसेलिपला) और केस बनाने वाले कीट (टिनिया पेलियोनेला)। कपड़े के वयस्क कीड़े का आकार 4 मिमी से 9 मिमी तक होता है - चावल के दाने के आकार के बराबर। एक बार जब लार्वा वयस्क पतंगों में बदल जाते हैं, तो वे फिर कभी नहीं खाते हैं।

एक असुविधाजनक आहार

कपड़ों के पतंगों की विकासवादी उत्पत्ति बहुत समय पहले अन्य सभी पतंगों के 98 प्रतिशत से अलग हो गई थी, इसलिए ये पतंगे कुछ चीजें अन्य पतंगों से कुछ अलग तरीके से करते हैं। अधिकांश टाइनीड प्रजातियां सामान्य कैटरपिलर की तरह जीवित पौधों पर नहीं, बल्कि सड़ती हुई लकड़ी, कवक, लाइकेन, डिट्रिटस और यहां तक कि गुफाओं में चमगादड़ों के मल को भी खाते हैं। तो यह आश्चर्यजनक नहीं है कि कुछ प्रजातियां प्राकृतिक रेशों में पाए जाने वाले केराटिन (एक प्रकार का प्रोटीन) को भी खाती हैं। वे फर, ऊन और रेशम जैसे जानवरों से प्राप्त वस्तुओं को खाना पसंद करते हैं। लेकिन आपकी अलमारी में सिंथेटिक या मिश्रित फाइबर भी सुरक्षित नहीं हैं। क्लॉथ मोथ लार्वा सिंथेटिक और मिश्रित रेशों से अपना पेट भरने के लिए जाने जाते हैं, विशेष रूप से वे जो पसीने या भोजन से सने होते हैं।

सभी कपड़े मोथ कीट नहीं होते हैं!

सौभाग्य से, 2,600 से अधिक प्रजातियों वाले इस समूह की केवल कुछ प्रजातियां ही कीट हैं। ऑस्ट्रेलिया में हमारे पास क्लॉथ मोथ समूह से संबंधित पतंगों की 190 से अधिक ज्ञात प्रजातियां हैं, और ऑस्ट्रेलियाई राष्ट्रीय कीट संग्रह में स्थित कई और अनाम नमूने वैज्ञानिकों द्वारा औपचारिक रूप से उन्हें कोई नाम दिए जाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। शोधकर्ता इस लेख के लेखकों सहित अपरंपरागत तरीकों से भोजन करने वाले पतंगों की विविधता और व्यवहार के बारे में अधिक समझने के लिए काम कर रहे हैं। हम में से एक (थिंग लुओ) वर्तमान में उन पतंगों का अध्ययन कर रहा है जिनके लार्वा पत्ती के बाहर की बजाय पत्ती के अंदर खाते हैं। शुक्र है, ये आपको अपने वॉर्डरोब में नहीं मिलेंगे।

क्या आपने लॉकडाउन के बाद बहुत दिन से बंद पड़ी अपनी कपड़ों की अलमारी को खोला है और यह देखकर हैरान हैं कि आपके गर्मी के कीमती और सुंदर कपड़ों में छेद हो चुके हैं? आप शायद इसके लिए कपड़ों में लगने वाले कीड़ों को दोष दे रहे हैं लेकिन असली अपराधी लार्वा (कैटरपिलर) हैं। लेकिन ये कीड़े कौन हैं? तथ्य यह है कि वे आपके कीमती कपड़े, रेशे और धागे खाते हैं, वास्तव में यह एक दिलचस्प और - पतंगों के लिए - असामान्य जीव विज्ञान को दर्शाता है।



जंगली झाड़ नहीं, ये है आयुर्वेद का सबसे चमत्कारी पौधा

सेहत की बात हो या स्वास्थ्य संबंधित बीमारियों की, आज के समय में लोगों ने आयुर्वेद का रुख करना शुरू कर दिया है। लोग न केवल आयुर्वेदिक चीजों को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बना रहे हैं। बल्कि आयुर्वेद के मुताबिक बताए गए बहुत से उपाय को रोजाना अपना रहे हैं। आज हम आपके सामने एक ऐसे ही पौधे के फायदे लेकर आए हैं जिसका महत्व आयुर्वेद में बहुत अधिक माना जाता है। हम बात कर रहे हैं रावोल्फिया सर्पेटिना या भारतीय स्नेकरूट की। यह भारतीय उपमहाद्वीप और पूर्वी एशिया में पाया जाता है। आमतौर पर यह समुद्र तल से 4000 फीट की ऊंचाई पर नमी वाले जंगल या छायादार इलाके में होता है। आपको बता दें कि इस पौधे पर गुलाबी और सफेद फूल पाए जाते हैं। आयुर्वेद के मुताबिक पौधे की जड़ों का उपयोग कई खतरनाक रोगों के उपचार के लिए भी किया जाता है। आइए जानते हैं इसी भारतीय स्नेकरूट के बारे में। आयुर्वेद के मुताबिक भारतीय स्नेकरूट का यह पौधा वात और कफ दोष को संतुलित करने का कार्य करता है। आपको बता दें कि पौधे के अंदर कई रसायनिक घटक हैं जैसे रेसेरप्राइन, अजमालिन, अजमेलिसिन, इंडोबाइन, सर्पेटाइन, योहिम्बाइन, योहिम्बाइन, रेस्कनामाइन आदि।

बच्चे को कब्ज से बचाना है और बढ़ानी है इम्यूनैटी

अगर आप बच्चे को शुरुआत से ही हेल्दी चीजें खिलाएं तो यह आदत उसे आगे चलकर भी पड़ जाती है। इसलिए हर मां की यही कोशिश रहती है कि वो शिशु के 6 महीने के होने के बाद से ही अपने बच्चे के खाने में हेल्दी चीजों को शामिल करना शुरू कर देती है। क्यूनोआ भी हेल्दी फूड्स में आता है और बच्चों के आहार में इसे जरूर शामिल करना चाहिए। यह पोषक तत्वों से भरपूर होता है जो बच्चों के विकास में मदद करता है। क्यूनोआ एक सुपरफूड है जो बच्चों को कई तरह से दिया जा सकता है। इसमें प्रोटीन, विभिन्न विटामिन और खनिज पदार्थ होते हैं। क्यूनोआ एंटीऑक्सीडेंट की तरह भी काम करता है और इसमें फाइबर भी खूब होता है जिससे बच्चों को कब्ज की शिकायत नहीं होती है। क्यूनोआ में एंटीऑक्सीडेंट उच्च मात्रा में होते हैं। इसमें कोलेस्ट्रॉल की मात्रा अन्य प्रोटीन युक्त स्रोतों की तुलना में बहुत कम होती है। यह फाइबर से भरपूर होता है और आसानी से पच जाता है। इसलिए क्यूनोआ खाने से बच्चे को पेट फूलने और कब्ज जैसी परेशानियां नहीं होती हैं। इसमें उच्च मात्रा में प्रोटीन होता है जो मांसपेशियों के विकास और इम्यूनैटी को बनाने में मदद करता है।

सोकर बढ़ाएं अपनी खूबसूरती, रात को ना खाएं ये चीजें



स्वस्थ और ग्लोइंग त्वचा के लिए गहरी और अच्छी नींद जरूरी होती है। आपने एक बात अपनी त्वचा पर जरूरी नोटिस की होगी कि जब भी आप रात को देर से सोती हैं या नींद पूरी करने के लिए पूरा समय नहीं मिल पाता तो अगले दिन त्वचा अपनी ताजगी खो देती है। फिर चाहे आप स्किन पर कुछ भी लगा लें। आपके चेहरे की पूरी खूबसूरती इस बात पर निर्भर करती है कि आपकी स्किन कैसी है। ना कि इस बात पर आपकी स्किन का टोन (रंग) कैसा है। क्योंकि त्वचा जब हेल्दी होती है तो आप अधिक खूबसूरत नजर आती हैं। हालांकि नींद पूरी और अच्छी हो, इसका फायदा सिर्फ आपकी त्वचा को नहीं मिलता बल्कि मानसिक और शारीरिक सेहत को मिलता है। जी हां, नींद पूरी होने से मन शांत रहता है और क्रिएटिविटी बनी रहती है। आप अपने कामों को बेहतर ढंग से कर पाती हैं। साथ ही पाचन सही रही है, जिससे शरीर को आपने खाए हुए भोजन का पूरा सत्व प्राप्त होता है।

फ्रांस में मिला नया वेरिएंट वैक्सीन को भी दे सकता है चकमा

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

कोविड -19 के अलग-अलग वेरिएंट एक के बाद एक सामने आ रहे हैं। जहां दुनिया पहले से ही ओमिक्रॉन वेरिएंट के कारण कोविड-19 मामलों में आई तेजी से जूझ रही है, वहीं फ्रांस के वैज्ञानिकों ने एक ऐसे वेरिएंट की तलाश की है, जो ओमिक्रॉन से भी ज्यादा संक्रामक है। वैज्ञानिक रूप से इसका नाम बी.1.640.2 है, लेकिन अब इसे 'फ्लू' कहा जा रहा है। दरअसल, इस वेरिएंट की खोज फ्रांस के मशहूर 'IHU' मेडिटरेनियन इंफेक्शन इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं ने की है। इसलिए इसका नाम भी इसी इंस्टीट्यूट के नाम पर रखा गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार, 'IHU' में 46 स्टूडेंट्स यानी ऑरीजनल वायरस की तुलना में 46 बदलाव पाए गए हैं, जो ओमिक्रॉन से ज्यादा हैं।

इसलिए दुनियाभर के वैज्ञानिकों में इस नए वेरिएंट को लेकर चिंता और बढ़ गई है। बता दें कि इस वेरिएंट का पहला मामला 10 दिसंबर को फ्रांस में पता चला। पहली बार यह दक्षिण फ्रांस के मरीज में पाया गया था, जो कैमरून की यात्रा करके लौटा था। लौटने के लगभग दो दिन बाद रोगी को हल्के श्वसन संबंधी लक्षणों का अनुभव होना शुरू हो गया और बाद में SARS-CoV-2 ने इसके संक्रमित होने की पुष्टि की। इसके बाद करीब 11 अन्य मामले सामने आए। नए साल की शुरुआत में सामने आया 'IHU' ओमिक्रॉन से कितना अलग और खतरनाक है जानते हैं यहां।

ओमिक्रॉन की तरह तेजी से नहीं फैलता नया वेरिएंट

फिलहाल राहत की बात है कि वेरिएंट बहुत तेजी से नहीं फैल रहा है। इसलिए ये कितना खतरनाक है, यह पूरी तरह से साफ नहीं है। बी.1.640.2 को अब तक अन्य देशों में नहीं देखा गया है और



WHO द्वारा इस पर अब तक किसी भी तरह के खतरे या महामारी का लेबल नहीं लगाया गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि नए-नए वेरिएंट सामने आते रहेंगे, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि ये अधिक खतरनाक होंगे। फिलहाल ओमिक्रॉन से पहले ही दुनिया जूझ रही है, ऐसे में 'IHU' ने एक बार फिर नई आशांकाओं को जन्म दे दिया है।

क्या हमें इससे डरने की जरूरत है?

ओमिक्रॉन की दहशत के बीच आए इस नए वेरिएंट ने एक बार फिर लोगों की चिंता बढ़ा दी है। ठ.1.640.2 उस दर से नहीं फैल रहा है, इसलिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। यह निश्चित रूप से इतना खतरनाक नहीं है, जितना की ओमिक्रॉन है। वेबसाइट के मुताबिक इस वेरिएंट का आखिरी बार 25 दिसंबर को पता चला था, उसके बाद ग्लोबल डेटा बेस में कोई नया मामला सामने नहीं आया है।

वैक्सीन भी नहीं कर सकती काम

फ्रांस में सामने आए इस 'IHU' वेरिएंट से दुनियाभर में एक बार फिर खलबली मच गई है। जांच में पता चला है कि 'IHU' ओमिक्रॉन की तरह ही आसानी से वैक्सीन की सुरक्षा कवच को चकमा दे सकता है। हालांकि लोगों के लिए यह वेरिएंट कितना घातक साबित होगा, कह पाना मुश्किल है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह वेरिएंट ओमिक्रॉन से ज्यादा संक्रामक है और वैक्सीन का भी इस पर कोई असर नहीं होगा। तब से यहां के वैज्ञानिक इसे लेकर शोध कर रहे हैं। दिल्ली के इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी के वैज्ञानिक विनोद स्कोरिया कहते हैं कि इस समय घबराने या बहुत ज्यादा चिंता करने की जरूरत नहीं है, लेकिन स्पष्ट रूप से आने वाले दिनों में इस पर करीब से ध्यान देना जरूरी है।